(जुलाई–दिसम्बर 2019 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, प्रथम सेमेस्टर

MHL-C111

द्विवेदी युगीन एवं छायावादी काव्य

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई–1
1. मैथिली शरण गुप्त – साकेत (नवम सर्ग)
2. जयशंकर प्रसाद – कामायनी (श्रद्धा सर्ग)

इकाई–2
3. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' – राम की शक्ति पूजा (राग–विराग, सम्पा० राम विलास शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
4. सुमित्रानन्दन पंत – मौन निमंत्रण, परिवर्तन, एक तारा, नौका–विहार (तारापथ, सम्पा० सुमित्रानन्दन पंत, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

इकाई–3 मैथिलीशरण गुप्त – साकेत का काव्य सौष्ठव, साकेत में आधुनिकता, गुप्त जी की राष्ट्रीय भावना, उर्मिला का विरह वर्णन।

जयशंकर प्रसाद – कामायनी का महाकाव्यत्व, छायावाद और कामायनी, प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ, प्रसाद की सौन्दर्य चेतना।

इकाई–4 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' – राम की शक्ति पूजा का काव्य–सौष्ठव, निराला की काव्यगत विशेषताएँ, निराला की प्रगति चेतना, निराला की भाषा–शैली।

सुमित्रानन्दन पंत – पंत की काव्य–यात्रा, पंत का प्रकृति–चित्रण, पंत की काव्य भाषा, पंत काव्य में कोमल कल्पना।

इकाई–5 **द्रुत पाठ**– द्रुत पाठ हेतु निर्धारित कवि– 1. नाथूराम शर्मा 'शंकर', 2. अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, 3. जगन्नाथ दास रत्नाकर, 4. महादेवी वर्मा। (इनके काव्य का सामान्य अध्ययन ही अपेक्षित है। इन पर दीर्घ उत्तरी प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे)

संदर्भ ग्रन्थ :

1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य – डॉ० कमला कान्त पाठक
2. मैथिलीशण गुप्त की काव्य साधना – उमा कान्त गोयल
3. साकेत : एक अध्ययन – डॉ० नगेन्द्र
4. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन – डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना
5. निराला की साहित्य साधना (भाग–2) – डॉ० राम विलास शर्मा
6. पंत का काव्य – प्रेम लता बाफना
7. महादेवी की काव्य चेतना – डॉ० राजेन्द्र मिश्र
8. महीयसी महादेवी – गंगा प्रसाद पाण्डेय
9. हरिऔध : जीवन और कृतित्व – मुकुन्द देव शर्मा
10. हरिऔध के महाकाव्य : वस्तु और शिल्प – डॉ० ज्ञान चन्द रावल

(जुलाई–दिसम्बर 2019 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, प्रथम सेमेस्टर

MHL-C112

कथेतर गद्य साहित्य

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई–1

1. चन्द्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद
2. आधे अधूरे – मोहन राकेश

इकाई–2

3. हिन्दी के ग्यारह श्रेष्ठ निबन्ध – सम्पा० डॉ० मधु शर्मा, सरस्वती प्रेस, देहरादून।
   - (1) कविता क्या है? (रामचन्द्र शुक्ल)
   - (2) अशोक के फूल (हजारी प्रसाद द्विवेदी)
   - (3) सौन्दर्य की वस्तुगत सत्ता और सामाजिक विकास (डॉ० राम विलास शर्मा)
   - (4) अस्ति की पुकार हिमालय (विद्या निवास मिश्र)
4. पथ के साथी – महादेवी वर्मा (दद्दा, निराला भाई, स्मरण प्रेमचन्द, प्रसाद)

इकाई–3 चन्द्रगुप्त का चरित्र–चित्रण, चाणक्य का चरित्रांकन, चन्द्रगुप्त का नाट्य शिल्प, चन्द्रगुप्त में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना।

आधे अधूरे में आधुनिकता बोध, आधे अधूरे की नाट्य भाषा, आधे अधूरे के कथ्य का विश्लेषण, सवित्री का चरित्रांकन।

इकाई–4 निबन्धकारों के निबन्धों का परिचय, निबन्धकारों की निबन्ध कला, निबन्धकारों के निबन्धों की भाषा शैली, निबन्ध की समीक्षा।

महादेवी वर्मा के संस्मरण–रेखाचित्र साहित्य का परिचय, महादेवी वर्मा के संस्मरण–रेखाचित्रों की विशेषताएँ, महादेवी वर्मा के संस्मरण– रेखाचित्रों के कथ्य का विश्लेषण, महादेवी वर्मा के संस्मरण– रेखाचित्रों की भाषा–शैली।

इकाई–5 **द्रुत पाठ**– द्रुत पाठ हेतु निर्धारित साहित्यकार– (1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – 'अंधेर नगरी' (प्रहसन), (2) स्वामी श्रद्धानन्द – 'कल्याण मार्ग का पथिक' (आत्म कथा), (3) राहुल सांकृत्यायन – 'घुमक्कड़शास्त्र' (यात्रावृत्त), (4) इन्द्र विद्यावाचस्पति 'मेरे पिता' (जीवनी)।

(इनके साहित्य का सामान्य अध्ययन ही अपेक्षित है। इन पर दीर्घ उत्तरी प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।)

संदर्भ ग्रन्थ :

1. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
2. मोहन राकेश के नाटक – गिरीश रस्तोगी
3. निबन्धकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – डॉ० विजय बहादुर सिंह
4. भारतेन्दु का नाट्य साहित्य – डॉ० वीरेन्द्र कुमार शुक्ल
5. आर्य समाज का इतिहास (भाग 5) – सम्पा० डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार

(जुलाई–दिसम्बर 2019 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, प्रथम सेमेस्टर

MHL-C113

भारतीय काव्य शास्त्र

पूर्णांक 100 | लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

इकाई–1 भारतीय काव्य शास्त्र का उद्‌भव और विकास, काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

रस सिद्धान्त – रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।

इकाई–2 अलंकार सिद्धान्त – मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

रीति सिद्धान्त – रीति की अवधारणा, काव्य–गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थानाएँ।

इकाई–3 वक्रोक्ति सिद्धान्त – वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।

ध्वनि सिद्धान्त – ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य, चित्र काव्य।

औचित्य सिद्धान्त – औचित्य सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

इकाई–4 हिन्दी कवि आचार्यों का काव्य शास्त्रीय चिन्तन – लक्षण काव्य परम्परा एवं कवि शिक्षा।

हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की आलोचना दृष्टि : रामचन्द्र शुक्ल, नंद दुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० राम विलास शर्मा, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० नामवर सिंह

इकाई–5 हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ – शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौन्दर्य शास्त्रीय, शैली वैज्ञानिक, समाज शास्त्रीय।

संदर्भ सूची

1. भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका – डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह
2. भारतीय काव्य शास्त्र – डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह
3. भारतीय काव्य शास्त्र – डॉ० निशा अग्रवाल
4. भारतीय साहित्य सिद्धान्त – डॉ० तारक नाथ बाली

(जुलाई–दिसम्बर 2019 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, प्रथम सेमेस्टर

MHL-C114

हिन्दी साहित्य का इतिहास (रीति काल तक)

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

इकाई–1 इतिहास–दर्शन और साहित्येतिहास, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की आधारभूत सामग्री, हिन्दी साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ, हिन्दी साहित्य के इतिहास में काल विभाजन और नामकरण।

इकाई–2 आदिकाल की परिस्थितियाँ, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो काव्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ, लौकिक साहित्य, आदि काल के प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ।

भक्ति आन्दोलन : उदय के सामाजिक–सांस्कृतिक कारण, भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तः प्रादेशिक वैशिष्ट्य।

इकाई–3 संत काव्य के प्रेरणा स्रोत, प्रमुख संत कवि और उनका काव्य, संत काव्य की प्रमुख विशेषताएँ।

सूफी काव्य का वैचारिक आधार, प्रमुख सूफी कवि और उनका काव्य, सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन के तत्व।

इकाई–4 राम काव्य परम्परा में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान, कृष्ण भक्ति के विभिन्न सम्प्रदाय : कवि और उनका काव्य, कृष्ण भक्ति काव्य के विकास में अष्ट छाप के कवियों का योगदान, सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्ण भक्त कवि, भक्ति काल का भक्तीतर काव्य।

इकाई–5 रीतिकाल की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिकालीन कवियों के वर्ग – रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त; रीतिबद्ध काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ, रीतिसिद्ध काव्य परम्परा और बिहारी, रीति मुक्त काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ, रीतिकाल के प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – राम चन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – राम कुमार वर्मा
3. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (खण्ड–1, 2) – डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ० बच्चन सिंह
5. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ० राम स्वरूप चतुर्वेदी
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास – सम्पा० डॉ० नगेन्द्र

(जनवरी–जून 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, द्वितीय सेमेस्टर

MHL-C211

छायावादोत्तर काव्य

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई–1
1. नागार्जुन : प्रतिनिधि कविताएँ सम्पा० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
   (प्रतिबद्ध हूँ, सिंदूर तिलकित भाल, उनको प्रणाम, बादल को घिरते देखा है, प्रेत का बयान, अकाल और उसके बाद, मास्टर, शासन की बंदूक)
2. अज्ञेय सम्पा० विद्या निवास मिश्र, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली (असाध्य वीणा)

इकाई–2
3. चाँद का मुँह टेढ़ा है, सम्पा० मुक्तिबोध (अँधेरे में)
4. संसद से सड़क तक, सम्पा० धूमिल (पटकथा)

इकाई–3 नागार्जुन की काव्यगत विशेषताएँ, नागार्जुन के काव्य में प्रगतिवादी चेतना, नागार्जुन के काव्य का शिल्प विधान, यथार्थ चेतना एवं लोक दृष्टि।
अज्ञेय की प्रयोग धर्मिता, अज्ञेय की काव्य भाषा, असाध्य वीणा की मूल संवेदना, असाध्य वीणा का शिल्पगत वैशिष्ट्य।

इकाई–4 मुक्तिबोध की काव्यगत विशेषताएँ, मुक्तिबोध के काव्य में फैंटेसी, अंधेरे में कविता का मूल कथ्य या संवेदना, अंधेरे में कविता का शिल्पगत वैशिष्ट्य।
धूमिल की काव्य चेतना, धूमिल की काव्य भाषा, पटकथा का कथ्य एवं शिल्प, साठोत्तरी कविता के परिप्रेक्ष्य में धूमिल का काव्य।

इकाई–5 **द्रुत पाठ**– द्रुत पाठ हेतु निर्धारित कवि – त्रिलोचन, भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश मेहता, कुँवर नारायण। (इनके काव्य का सामान्य अध्ययन ही अपेक्षित है। इन पर दीर्घ उत्तरी प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे)

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. अज्ञेय की कविता : एक मूल्यांकन – चन्द्रकान्त वांदिवडेकर
2. भवानी प्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार – डॉ० अनुपम मिश्र
3. नागार्जुन की काव्य यात्रा – डॉ० रतन कुमार पाण्डेय
4. नागार्जुन की कविता – डॉ० अजय तिवारी
5. अंतस्तल का पूरा विप्लव : अंधेरे में – सम्पा० निर्मला जैन
6. मुक्तिबोध की कविताई – अशोक चक्रधर
7. धूमिल और उनका काव्य संघर्ष – डॉ० ब्रह्मदेव मिश्र
8. नरेश मेहता का काव्य : विमर्श और मूल्यांकन – प्रभाकर शर्मा
9. त्रिलोचन का कवि–कर्म – विष्णु चन्द्र शर्मा
10. कुँवर नारायण और उनका साहित्य – अनिल मेहरोत्रा
11. कटघरे का कवि धूमिल – डॉ० ग०तु० अष्टेकर

(जनवरी–जून 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, द्वितीय सेमेस्टर

MHL-C212

कथा साहित्य

पूर्णांक 100 | सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई–1 1 गोदान – प्रेमचन्द

इकाई–2 2 बाण भट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी

3 चयनित कहानियाँ – सम्पा० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय, डॉ० मृदुल जोशी प्रकाशक– भारत पुस्तक भण्डार, सोनिया विहार, दिल्ली– 96

1. उसने कहा था (चन्द्रधर शर्मा गुलेरी), 2. कफन (प्रेमचन्द), 3. पत्नी (जैनेन्द्र कुमार), 4. परिंदे (निर्मल वर्मा), 5. वापसी (उषा प्रियंवदा)

(कहानियों से व्याख्या नहीं पूछी जायेगी)

इकाई–3 गोदान की समस्याएँ, गोदान में आदर्श और यथार्थ, महाकाव्यात्मक उपन्यास गोदान।

चरित्र–चित्रण : होरी, मालती, मेहता, धनिया, गोबर, राय साहब।

इकाई–4 बाणभट्ट की आत्म कथा : भाषा एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य, इतिहास और कल्पना, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, चरित्र–चित्रण : बाणभट्ट, भट्टिनी, निपुणिका।

चयनित कहानीकारों की कहानी–कला, चयनित कहानियों की समीक्षा।

इकाई–5 **द्रुत पाठ** – द्रुत पाठ हेतु निर्धारित कथाकार, उपन्यासकार– फणीश्वरनाथ 'रेणु' (मैला आंचल), कहानीकार– सुदर्शन, मोहन राकेश, अमर कान्त।

(इनके साहित्य का सामान्य अध्ययन ही अपेक्षित है। इन पर दीर्घ उत्तरी प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।)

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. गोदान – सम्पा० राजेश्वर गुरु
2. फणीश्वर नाथ रेणु और मैला आंचल – गोपाल राय
3. उपन्यासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – डॉ० त्रिभुवन सिंह
4. हिन्दी के प्रतिनिधि कहानीकार – डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना

(जनवरी–जून 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, द्वितीय सेमेस्टर

MHL-C213

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

पूर्णांक 100 | लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

इकाई–1 प्लेटो के काव्य सिद्धान्त, अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन, विरेचन सिद्धान्त, लौंजाइनस की उदात्त विषयक अवधारणा।

इकाई–2 ड्राइडन के काव्य–सिद्धान्त, काव्य–भाषा और शैली के सम्बन्ध में विलियम वर्ड्सवर्थ के विचार, कॉलरिज की कल्पना विषयक अवधारणा, कल्पना तथा ललित कल्पना।

इकाई–3 मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य, क्रोचे का अभिव्यंजनावाद, टी०एस० इलियट – परम्परा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

इकाई–4 आई०ए० रिचर्ड्स – भाषा के रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।

सिद्धान्त और वाद – आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद।

इकाई–5 आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ – संरचनावाद, विखण्डनवाद, शैली विज्ञान, उत्तर आधुनिकतावाद।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. पाश्चात्य साहित्य–चिंतन – निर्मला जैन, कुसुम बाँठिया
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – अधुनातन संदर्भ – डॉ० सत्यदेव मिश्र
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ० देवेन्द्र नाथ शर्मा
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त – डॉ० शांति स्वरूप गुप्त
5. पाश्चात्य समीक्षा – सिद्धान्त और वाद – डॉ० सत्यदेव मिश्र
6. पाश्चात्य काव्यानुशीलन – डॉ० मृदुल जोशी

(जनवरी–जून 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, द्वितीय सेमेस्टर

MHL-C214

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

इकाई–1 भारतीय नवजागरण, भारतेंदु युग : प्रमुख कवि और काव्य, भारतेंदु युगीन हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, द्विवेदी युग : प्रमुख कवि और काव्य, द्विवेदी युगीन हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, छायावाद : प्रमुख कवि और काव्य, छायावाद युगीन हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, स्वच्छंदतावादी काव्यधारा, राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा.

इकाई–2 प्रगतिवादी काव्यधारा : प्रमुख कवि और काव्य, प्रगतिवादी काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएं, प्रयोगवाद : प्रमुख कवि और काव्य, प्रयोगवादी काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएं, नई कविता : स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ, नवगीत परम्परा, समकालीन हिन्दी कविता.

इकाई–3 हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं का विकास- उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध.

इकाई–4 हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं का विकास- एकांकी, संस्मरण-रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी, यात्रा साहित्य, रिपोर्ताज. हिन्दी आलोचना का उद्‌भव और विकास.

इकाई–5 भारतीय नवजागरण में आर्य समाज की भूमिका, महर्षि दयानंद सरस्वती का हिन्दी गद्य और उसकी विशेषताएं, हिन्दी साहित्यकार के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द का मूल्यांकन, भारतेन्दुयुगीन हिन्दी कविता पर आर्य समाज का प्रभाव, द्विवेदी युगीन हिन्दी कविता पर आर्य समाज का प्रभाव.

आर्य समाज से प्रभावित हिन्दी के प्रमुख कवि, नाटककार, कथाकार. आर्य समाज की हिन्दी पत्रकारिता.

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – राम चन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – राम कुमार वर्मा
3. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (खण्ड–1, 2) – डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ० बच्चन सिंह
5. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ० राम स्वरूप चतुर्वेदी

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-C311

प्राचीन एवं निर्गुण भक्ति काव्य

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई–1

1. संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो – सम्पा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह, साहित्य भवन प्रा०लि०, इलाहाबाद
   शशिव्रता विवाह प्रस्ताव – आरम्भ से छन्द संख्या 50 तक।
2. विद्यापति पदावली – सम्पा० रामवृक्ष बेनीपुरी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
   पद संख्या – 3, 27, 35, 36, 40, 46, 51, 57, 153, 159, 179, 183, 187, 193, 196, 205, 231, 241, 250, 252 (20 पद)।

इकाई–2

3. कबीर ग्रन्थावली – सम्पा० डॉ० श्याम सुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
   साखी – गुरुदेव कौ अंग, सुमिरण कौ अंग, विरह कौ अंग।
4. जायसी ग्रन्थावली – सम्पा० रामचन्द्र शुक्ल
   पदमावत – नागमती वियोग खण्ड।

इकाई–3 पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, पृथ्वीराज रासो का महाकाव्यत्व, पृथ्वीराज रासो का काव्य–सौष्ठव, पृथ्वीराज रासो की भाषा।
विद्यापति पदावली में श्रृंगार एवं भक्ति, विद्यापति पदावली का वैशिष्ट्य, विद्यापति की गीति योजना, विद्यापति पदावली की भाषा।

इकाई–4 कबीर का समाज–दर्शन, कबीर की भक्ति–भावना, कबीर की काव्य कला, कबीर का रहस्यवाद।
पदमावत का महाकाव्यत्व, जायसी की प्रेम–भावना, नागमती का विरह वर्णन, जायसी का रहस्यवाद।

इकाई–5 **द्रुत पाठ** – द्रुत पाठ हेतु निर्धारित कवि– (1) सरहपा (2) अब्दुर्रहमान (3) रैदास (4) गुरुनानक (इनके काव्य का सामान्य अध्ययन ही अपेक्षित है। इन पर दीर्घ उत्तरी प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।)

संदर्भ ग्रन्थ :

1. चंदबरदायी और उनका काव्य – डॉ० विपिन बिहारी त्रिवेदी
2. विद्यापति – डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित
3. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. कबीर की विचारधारा – गोविन्द त्रिगुणायत
5. जायसी ग्रन्थावली – सम्पा० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (भूमिका भाग)
6. जायसी और उनका काव्य – डॉ० शिव सहाय पाठक
7. संदेश रासक (समीक्षा भाग) – सम्पा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथ त्रिपाठी
8. संत रैदास : कृतित्व, जीवन और विचार – योगेन्द्र सिंह
9. युग प्रवर्तक संत गुरु रविदास – पृथ्वी सिंह आजाद

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-C312

सगुण भक्ति काव्य

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई–1

1. भ्रमरगीत सार – सम्पा० रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
   पद सं०– 8, 13, 21, 22, 23, 24, 25, 27, 34, 37, 38, 42, 45, 52, 57, 61, 62, 64, 65, 75, 77, 82, 85, 89, 95 (25 पद)
2. रामचरित मानस – प्रका० गीता प्रेस गोरखपुर
   उत्तरकाण्ड (दोहा सं० 36 से 74 तथा 116 से 128 तक)

इकाई–2

3. मीराँबाई की सम्पूर्ण पदावली, सम्पा० डॉ० राम किशोर शर्मा, सुजीत कुमार शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
   पद सं० – 1, 3, 5, 14, 18, 19, 22, 34, 36, 54, 61, 70, 102, 137, 151, 155, 158, 159, 160, 179 (20 पद)
4. रसखान रचनावली – सम्पा० विद्यानिवास मिश्र, सत्य देव मिश्र, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
   सुजान रसखान – (आरम्भ के 10 छन्द)

इकाई–3 भ्रमरगीत की विशेषताएँ, गोपियों का वाग्वैदग्ध्य, गोपियों का विरह वर्णन, भ्रमरगीत का कलागत वैशिष्ट्य।

उत्तरकाण्ड का काव्य सौष्ठव, तुलसी की भक्ति भावना, तुलसी का समन्वयवाद, रामचरित मानस का काव्य वैभव।

इकाई–4 मीराँ की भक्ति भावना, मीराँ की काव्यगत विशेषताएँ, मीराँ की विरहानुभूति, मीराँ की भाषा।

रसखान की काव्यगत विशेषताएँ, भक्ति–भावना, प्रेमतत्व निरूपण, रसखान की भाषा।

इकाई–5 **द्रुत पाठ**– द्रुत पाठ हेतु निर्धारित कवि– परमानन्द दास, नन्द दास, हित हरिवंश, रहीम।

(इनके काव्य का सामान्य अध्ययन ही अपेक्षित है। इन पर दीर्घ उत्तरी प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।)

संदर्भ ग्रन्थ :

1. भ्रमगीत सार (भूमिका भाग) – रामचन्द्र शुक्ल
2. सूर की काव्य साधना – गोविन्द राम शर्मा
3. सूर की काव्य कला – मनमोहन गौतम
4. तुलसी काव्य मीमांसा – डॉ० उदय भानु सिंह
5. मीरा का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी
6. रसखान और उनका काव्य – डॉ० माजदा असद
7. रहीम और उनका काव्य – डॉ० देशराज सिंह भाटी

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, प्रथम सेमेस्टर

MHL-E313

भाषा विज्ञान

पूर्णांक 100 | सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट–6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई–1 भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विशेषताएँ, भाषा परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, भाषा संरचना और भाषा प्रकार्य।

भाषा विज्ञान– परिभाषा एवं स्वरूप, भाषा विज्ञान का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध, भाषा विज्ञान के अंग, भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियाँ।

इकाई–2 स्वन विज्ञान का स्वरूप, स्वन विज्ञान की शाखाएँ, वाग अवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वन परिवर्तन के कारण और दिशाएँ, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण

इकाई–3 रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, शब्द और रूप (पद) का अन्तर, सम्बन्ध तत्व और अर्थ तत्व, व्याकरणिक कोटियाँ, रूपिम की अवधारणा और भेद।

इकाई–4 वाक्य की परिभाषा, वाक्य के भेद, वाक्य–विश्लेषण, निकटस्थ अवयव विश्लेषण, गहन संरचना और बाह्य संरचना, वाक्य परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं।

इकाई–5 अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ।

समाज भाषाविज्ञान, शैली विज्ञान और कोश विज्ञान का सामान्य परिचय।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. भाषा विज्ञान – डॉ० भोला नाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान और भाषा शास्त्र – कपिल देव द्विवेदी
3. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धान्त – डॉ० राम किशोर शर्मा
4. आधुनिक भाषा विज्ञान – कृपा शंकर सिंह एवं चतुर्भुज सहाय
5. भाषा विज्ञान की भूमिका – डॉ० देवेन्द्र नाथ शर्मा

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-E314

भारतीय साहित्य

पूर्णांक : 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन : 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1 भारतीय साहित्य का स्वरूप।
भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ।
भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब।
भारतीयता का समाजशास्त्र।
हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

इकाई – 2 1. **उपन्यास** – मृत्युंजय – वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य (असमिया)
2. **कविता संग्रह** – वर्षा की सुबह – सीताकान्त महापात्र (उड़िया)
3. **नाटक** – घासीराम कोतवाल – विजय तेंदुलकर (मराठी)

इकाई – 3 मराठी साहित्य का इतिहास।

इकाई – 4 हिन्दी और मराठी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन–
हिन्दी और मराठी निर्गुण संत काव्य का तुलनात्मक अध्ययन।
हिन्दी और मराठी कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन।
हिन्दी और मराठी राम काव्य का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई – 5 हिन्दी तथा मराठी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन।
हिन्दी और मराठी नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन।
हिन्दी और मराठी आधुनिक कविता का तुलनात्मक अध्ययन।

संदर्भ सामग्री–

1. भारतीय साहित्य – डॉ० नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
2. मराठी भाषा और साहित्य – राजमल बोरा, कालेज बुक डिपो, जयपुर।
3. मराठी भाषा और साहित्य – राजमल बोरा, गणेश अष्टेकर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. मराठी सन्त काव्य – वेद कुमार वेदालंकार, कालेज बुक डिपो, जयपुर।
5. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ – राम विलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. मराठी साहित्य : परिदृश्य – चंद्रकांत वांदिवडेकर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-E315

भाषा शिक्षण

पूर्णांक : 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1

- भाषा–शिक्षण : उद्देश्य और स्वरूप
- भाषा–शिक्षण के सिद्धान्त : उद्दीपन–अनुक्रिया पुनर्बलन सिद्धान्त, माध्यमीकरण, अंतर्जातक्षमता, संज्ञानात्मक विकास।
- भाषा–शिक्षण के संदर्भ में भाषा के प्रकार : मातृभाषा, द्वितीय भाषा। विदेशी भाषा, समतुल्य भाषा, परिपूरक भाषा, सहायक भाषा, संपूरक भाषा।

इकाई – 2

- मातृभाषा–शिक्षण और अन्य भाषा–शिक्षण में अंतर। द्वितीय भाषा–शिक्षण और विदेशी भाषा–शिक्षण।
- भाषा–शिक्षण की विधियाँ : व्याकरण–अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, श्रवण–भाषण विधि, अभिक्रमित स्वाध्याय विधि, संप्रेषणात्मक विधि।

इकाई – 3

- भाषा कौशल और उनका विकास : श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन कौशलों का स्वरूप और उनमें योग्यता प्राप्ति के विविध सोपान।
- भाषा–शिक्षण में उपयोगी साधन–सामग्री : औपचारिक भाषा–शिक्षण, नक्शे, चार्ट, चित्र, भाषा–प्रयोगशाला, अनौपचारिक भाषा–शिक्षण, आकाशवाणी, सिनेमा, दूरदर्शन आदि।

इकाई – 4

- भाषा–शिक्षण और अभिरचना अभ्यास : आधारभूत सिद्धान्त और मान्यताएँ, अभिरचना अभ्यास की सार्थकता और सीमाएँ।
- व्यतिरेकी विश्लेषण : आधारभूत सिद्धान्त और मान्यताएँ, भाषिक व्याघात। व्यतिरेकी विश्लेषण की प्रक्रिया, व्यतिरेकी विश्लेषण की सार्थकता और सीमाएँ।

इकाई – 5

- त्रुटि–विश्लेषण – आधारभूत सिद्धान्त और मान्यताएँ। त्रुटियों के स्रोत–अंतरभाषा की अवधारणा, शिक्षार्थी व्याकरण की संकल्पना और त्रुटि–विश्लेषण, त्रुटि–विश्लेषण की सार्थकता और सीमाएँ।
- भाषा–परीक्षण और मूल्यांकन, भाषा–शिक्षण में निदानात्मक और उपचारात्मक विधियाँ।
- द्वितीय और विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी भाषा–शिक्षण।
- हिन्दी उच्चारण, वर्तनी और व्याकरण का शिक्षण।

संदर्भ सामग्री

1. भाषा शिक्षण – डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
2. भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान – ब्रजेश्वर वर्मा
3. भाषा मूल्यांकन तथा परीक्षण – किशोरी लाल शर्मा
4. अन्य भाषा शिक्षण के कुछ पक्ष – अमर बहादुर सिंह
5. हिन्दी शिक्षण – कर्ण सिंह

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-E316

प्रयोजन मूलक हिन्दी

पूर्णांक 100 | लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

इकाई–1 **हिन्दी के विभिन्न रूप**

सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।

कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य – प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण।

पारिभाषिक शब्दावली : स्वरूप एवं महत्त्व, पारिभाषिक शब्दावली–निर्माण के सिद्धान्त।

ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली का संक्षिप्त/सामान्य परिचय।

कम्प्यूटर : सामान्य परिचय, रूपरेखा, उपयोग, क्षेत्र तथा कम्प्यूटर की विशेषताएँ, इंटरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र।

इकाई–2 **पत्रकारिता** : स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार। हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास। समाचार लेखन कला। सम्पादन के आधारभूत तत्त्व। व्यावहारिक प्रूफ शोधन। शीर्षक की संरचना, शीर्षक सम्पादन। सम्पादकीय लेखन। प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता।

इकाई–3 **जनसंचार** : प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ। विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप – मुद्रण, श्रव्य, दृश्य–श्रव्य, इंटरनेट। मौखिक भाषा की प्रकृति। समाचार लेखन एवं वाचन। उद्घोषणा लेखन। विज्ञापन लेखन। फीचर।

इकाई–4 **दृश्य – श्रव्य माध्यम** (फिल्म, टेलीविजनएवं वीडियो)

दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति। दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य। पटकथा लेखन। संवाद लेखन। साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण। विज्ञापन की भाषा।

इंटरनेट : सामग्री सृजन

इकाई–5 **अनुवाद** – अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि। अनुवाद के प्रकार, हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका। कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद। वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद का महत्त्व। साहित्यिक अनुवाद के सिद्धान्त एवं व्यवहार।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – सम्पादक रविन्द्रनाथ प्रसाद, के०हि० संस्थान
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ० नरेश मिश्र, राजपाल एण्ड संस कश्मीरी गेट, दिल्ली
3. प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन – भोलानाथ तिवारी
4. कम्प्यूटर और हिन्दी – डॉ० हरिमोहन
5. प्रशासनिक हिन्दी : टिप्पण प्रारूपण एवं पत्र लेखन – हरिमोहन
6. प्रयोजन मूलक हिन्दी और उसका अनुप्रयोग – डॉ० ज्ञान चन्द रावल

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-E317

नाटक और रंगमंच

पूर्णांक 100 | सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1 (व्याख्या)

1. अजात शत्रु – जयशंकर प्रसाद
2. कोमल गांधार – डॉ० शंकर शेष
3. कौमुदी महोत्सव – डॉ० राम कुमार वर्मा
4. अंधा युग – धर्मवीर भारती

इकाई – 2

- नाटक और रंगमंच का स्वरूप
- नाट्योत्पत्ति सम्बन्धी विविध मत
- नाट्य अध्ययन का स्वरूप
  - नाटक का विधागत वैशिष्ट्य
  - नाटक और रंगमंच का अंतःसंबंध
  - नाटक में दृश्य और श्रव्य तत्वों का समायोजन

इकाई – 3 नाट्य–भेद

– भारतीय रूपक–उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)

– पारम्परिक नाट्य–रूप : रामलीला, रासलीला, स्वांग, नौटंकी, माच, ख्याल, विदेसिया आदि।

– पाश्चात्य नाटक (सामान्य परिचय)

इकाई – 4

- नाट्य–विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन
- रंगमंच के प्रकार, रंगशिल्प, रंग संप्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)
- विश्व के प्रमुख रंग चिंतक : भरत, स्तानिस्लाव्स्की, ब्रेख्त के अभिनय–सिद्धान्त।

इकाई – 5

- हिन्दी नाटक और रंगमंच का संक्षिप्त इतिहास–

  – नाटक का विकास : भारतेन्दु युग, प्रसाद युग, स्वातंत्र्योत्तर काल, नया नाटक।

  रंगमंच : लोक–नाट्य (व्यावसायिक, अव्यावसायिक)

  – पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, प्रमुख सरकारी रंग संस्थाएँ, नुक्कड़ नाटक।
- हिन्दी नाट्य–चिंतन – भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास – डॉ० दशरथ ओझा
2. आधुनिक भारतीय नाट्य विमर्श – जयदेव तनेजा
3. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी
4. नाटक तथा रंग परिकल्पना – गिरीश रस्तोगी

(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-E318

दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन

पूर्णांक 100 लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

इकाई–1 माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार, हिन्दी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास, रेडियो नाटक की प्रविधि, रंग नाटक, पाठ्य नाटक और रेडियो नाटक का अन्तर।

इकाई–2 रेडियो नाटक के प्रमुख भेद – रेडियो धारावाहिक, रेडियो रूपांतर, रेडियो फैन्टेसी, संगीत रूपक, आलेख रूपक (डाक्यूमेंट्री फीचर)।

इकाई–3 टी०वी० नाटक की तकनीक, टेली ड्रामा, टेली फिल्म, डाक्यूड्रामा तथा टी०वी० धारावाहिक में साम्य–वैषम्य, संचार माध्यम के अन्य विविध रूप।

इकाई–4 साहित्यिक विधाओं की दृश्य–श्रव्य रूपांतरण–कला। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन–संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि।

इकाई–5 संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा। विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि। संचार माध्यमों की भाषा, हिन्दी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ।

संदर्भ ग्रन्थ

1. मीडिया लेखन – डॉ० रमेशचन्द्र त्रिपाठी
2. टेलीविजन समाचार – शकील हसन समसी
3. दूरदर्शन संचार माध्यम – इग्नू, नई दिल्ली
4. इलैक्ट्रानिक मीडिया – टी०डी०एस० आलोक
5. जनसंचार : बदलते परिप्रेक्ष्य में – डॉ० बलबीर कुन्दरा

(जनवरी–जून 2021 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, चतुर्थ सेमेस्टर

MHL-C411

रीतिकालीन काव्य

पूर्णांक 100 | लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई–1 रीतिकाव्य धारा – सम्पा० रामचन्द्र तिवारी, डॉ० रामफेर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
केशवदास, बिहारी (सम्पूर्ण)

इकाई–2 रीति काव्यधारा– भूषण, घनानन्द (सम्पूर्ण)

इकाई–3 केशव का आचार्यत्व, केशव की काव्य–कला, केशव की संवाद योजना, रामचन्द्रिका का काव्य–सौष्ठव।
बिहारी की बहुज्ञता, बिहारी की सौन्दर्य भावना, बिहारी की काव्य कला, बिहारी के नीति एवं भक्तिपरक दोहों का वैशिष्ट्य।

इकाई–4 भूषण की राष्ट्रीय चेतना, भूषण : वीर रस के श्रेष्ठ कवि, भूषण के काव्य की अन्तर्वस्तु, भूषण की काव्य कला।
घनानन्द की प्रेम व्यंजना, घनानन्द की विरहानुभूति, घनानन्द की काव्य दृष्टि, स्वच्छन्द काव्यधारा और घनानन्द।

इकाई–5 **द्रुत पाठ** – द्रुत पाठ हेतु निर्धारित कवि – देव, पदमाकर, सेनापति, द्विजदेव।
(इनके काव्य का सामान्य अध्ययन ही अपेक्षित है। इन पर दीर्घ उत्तरी प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।)

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. केशव और उनका साहित्य – डॉ० विजय पाल सिंह
2. आचार्य केशवदास – डॉ० हीरालाल दीक्षित
3. बिहारी का नया मूल्यांकन – डॉ० बच्चन सिंह
4. बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
5. भूषण और उनका साहित्य – डॉ० राजमल बोरा
6. भूषण विमर्श – आचार्य भगीरथ प्रसाद दीक्षित
7. घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा – डॉ० मनोहर लाल गौड़
8. घनानन्द : काव्य और आलोचना – डॉ० किशोरी लाल
9. पदमाकर की काव्य साधना : अखौरी गंगा प्रसाद सिंह
10. देव और उनकी कविता – डॉ० नगेन्द्र

(जनवरी–जून 2021 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, चतुर्थ सेमेस्टर

MHL-C412

हिन्दी भाषा

पूर्णांक 100 | लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

इकाई–1 हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ (वैदिक तथा लौकिक संस्कृत) और उनकी विशेषताएं, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ (पालि, प्राकृत, अपभ्रंश) और उनकी विशेषताएँ, आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण, आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ : विकास एवं परिचय।

इकाई–2 हिन्दी का भौगोलिक विस्तार : हिन्दी : अर्थ एवं विकास, हिन्दी की उपभाषाएँ (पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी), पूर्वी तथा पश्चिमी हिन्दी की बोलियों का परिचय।

इकाई–3 हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था – खण्ड्य स्वनिम, खण्ड्येतर स्वनिम, हिन्दी शब्द रचना – उपसर्ग, प्रत्यय, समास; हिन्दी की व्याकरणिक कोटियाँ – लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था। हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और शब्द रूप। हिन्दी वाक्य–रचना : पदक्रम और अन्विति।

हिन्दी के विविध रूप : सम्पर्क–भाषा, राष्ट्र–भाषा, राजभाषा। माध्यम–भाषा, संचार भाषा। हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।

इकाई–4 हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ – कम्प्यूटर और हिन्दी, कम्प्यूटर का परिचय, शब्द–संसाधन (वर्ड प्रोसेसिंग) और आँकड़ा संसाधन (डाटा प्रोसेसिंग)। वर्तनी शोधन, मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा शिक्षण।

इकाई–5 देवनागरी लिपि : देवनागरी लिपि का उद्भव और विकास, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, देवनागरी लिपि का मानकीकरण।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. भाषा विज्ञान – डॉ० भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी भाषा और भाषा विज्ञान – डॉ० नरेश मिश्र
3. हिन्दी भाषा : इतिहास और स्वरूप – डॉ० राजमणि शर्मा
4. हिन्दी भाषा का विकास – डॉ० देवेन्द्र नाथ शर्मा एवं रामदेव त्रिपाठी
5. हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप – डॉ० हरदेव बाहरी
6. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि – डॉ० देवेन्द्र नाथ शर्मा
7. राजभाषा हिन्दी – डॉ० कैलाश चन्द भाटिया
8. भाषा शिक्षण – रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव

(जनवरी–जून 2021 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, चतुर्थ सेमेस्टर

MHL-E413

विशेष अध्ययन – सूरदास

पूर्णांक 100 | लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई–1 सूरसागर सार – सम्पा० डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
(विनय तथा भक्ति)

इकाई–2 (गोकुल लीला, उद्धव संदेश)

इकाई–3 सूर की भक्ति भावना, सूर की दार्शनिक चेतना, सूर का वात्सल्य वर्णन, सूर का श्रृंगार वर्णन।
गोपियों का विरह वर्णन, सूर की सौन्दर्य योजना, सूर काव्य का मनोवैज्ञानिक पक्ष, सूर काव्य में लोक तत्व।

इकाई–4 सूर का प्रकृति चित्रण, सूर की गीति योजना, सूर के भ्रमर गीत का वैशिष्ट्य, सूर की गोपियाँ।
अष्टछाप के कवियों में सूर का स्थान, सूर की भाषा, सूर की काव्य कला, सूर काव्य की प्रासंगिकता।

इकाई–5 श्रीमदभागवत और सूर सागर, पुष्टि मार्ग और सूरदास, सूर की प्रतीक योजना, सूर का दैन्य भाव।
सूर पर जयदेव और विद्यापति का प्रभाव, सूर और नन्द दास की गोपियाँ, सूर की बिम्ब योजना, सूर की राधा, सूर का राम काव्य।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. सूर और उनका साहित्य – डॉ० हरवंश लाल शर्मा
2. भारतीय साधना और सूर साहित्य – डॉ० मुंशीराम शर्मा
3. सूर सौरभ (भाग – 1,2) – डॉ० मुंशीराम शर्मा
4. सूर की काव्य साधना – गोविन्द राम शर्मा
5. सूर की काव्य कला – डॉ० मनमोहन गौतम
6. सूर की साहित्य साधना – सम्पा० डॉ० भगवत स्वरूप मिश्र, विश्वम्भर अरुण
7. सूरदास – सम्पा० हरवंश लाल शर्मा
8. सूर की काव्य चेतना – डॉ० रत्नाकर पाण्डेय
9. सूर सर्वस्व – प्रभु दयाल मीतल
10. सूर साहित्य संदर्भ – सम्पा० राम स्वरूप आर्य, डॉ० गिरिराज शरण अग्रवाल
11. सूर की सांस्कृतिक चेतना और उनका युगबोध – डॉ० सन्त राम वैश्य
12. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य – डॉ० मैनेजर पाण्डेय

(जनवरी–जून 2021 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, चतुर्थ सेमेस्टर

MHL-E414

विशेष अध्ययन – तुलसीदास

पूर्णांक 100 | लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम : (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई–1 रामचरितमानस (अयोध्या काण्ड) गीता प्रेस, गोरखपुर
विनयपत्रिका, गीता प्रेस, गोरखपुर
पद संख्या – 73,79,88,90,101,105,111,115,120,162,172,174,198,245, 268 (15 पद)

इकाई–2 कवितावली (बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड), गीता प्रेस, गोरखपुर
गीतावली (सुन्दरकाण्ड), गीता प्रेस, गोरखपुर

इकाई–3 तुलसीदास की युगीन पृष्ठभूमि, तुलसी की भक्ति भावना, तुलसी की दार्शनिक चेतना, तुलसी का लोक नायकत्व।
रामचरितमानस का काव्य वैभव, तुलसी का समन्वयवाद, रामचरित मानस के प्रमुख पात्रों का चरित्रगत वैशिष्ट्य, आधुनिक संदर्भ और रामचरितमानस।

इकाई–4 विनयपत्रिका का काव्य–सौष्ठव, विनय पत्रिका के आधार पर तुलसी की भक्ति भावना, विनय पत्रिका के आधार पर तुलसी की दार्शनिक चेतना, विनयपत्रिका का कलागत सौन्दर्य।

इकाई–5 तुलसी की रचनाओं का परिचय, कवितावली का काव्य सौन्दर्य, गीतावली का काव्य–सौष्ठव, तुलसी का युग बोध।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. गोस्वामी तुलसी दास – रामचन्द्र शुक्ल
2. तुलसी दर्शन – डॉ० बलदेव मिश्र
3. तुलसी काव्य मीमांसा – डॉ० उदयभानु सिंह
4. तुलसी : विविध संदर्भों में – डॉ० वचन देव कुमार
5. तुलसी साहित्य और साधना – डॉ० इन्द्र पाल सिंह
6. तुलसी : संदर्भ और समीक्षा – डॉ० त्रिभुवन सिंह
7. भक्तिकालीन काव्य की प्रासंगिकता – सम्पा० डॉ० नरेश मिश्र

(जनवरी–जून 2021 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, चतुर्थ सेमेस्टर

MHL-E415

विशेष अध्ययन – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम (इकाई–1, 2 से व्याख्या)

इकाई – 1 काव्य – प्रेम मालिका, प्रेम सरोवर, प्रेम माधुरी, प्रेम प्रलाप।
नाटक – भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी।

इकाई – 2 निबन्ध – (1) भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है, (2) वैष्णवता और भारतवर्ष, (3) स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन, (4) कंकड़ स्तोत्र, (5) लेवी प्राण लेबी।
यात्रा वृत्त – हरिद्वार, लखनऊ, जबलपुर, सरयूयार, वैद्यनाथ की यात्रा।

इकाई – 3 भारतेन्दु की काव्य चेतना, भारतेन्दु के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य, भारतेन्दु का कृष्ण भक्ति काव्य। भारतेन्दु की काव्यगत विशेषताएँ।
भारतेन्दु का नाट्य साहित्य, भारतेन्दु के नाटकों में युग बोध, भारतेन्दु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन, भारतेन्दु की नाट्य–भाषा।

इकाई – 4 भारतेन्दु की निबन्ध–कला, भारतेन्दु के निबन्धों की विशेषताएँ, भारतेन्दु का यात्रा साहित्य, भारतेन्दु के यात्रा साहित्य की विशेषताएँ।

इकाई – 5 हिन्दी नवजागरण और भारतेन्दु, भारतेन्दु की राष्ट्रीय भावना, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पत्रकारिता, भारतेन्दु की भाषा–चेतना।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – डॉ० राम विलास शर्मा
2. भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा – डॉ० राम विलास शर्मा
3. भारतेन्दु के निबन्ध – डॉ० केशरी नारायण शुक्ल
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
5. भारतेन्दु का नाट्य साहित्य – डॉ० वीरेन्द्र कुमार शुक्ल
6. भारतेन्दु के नाटक – डॉ० भानुदेव शुक्ल
7. भारतेन्दु के नाटकों का शास्त्रीय अनुशीलन – डॉ० गोपीनाथ तिवारी
8. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और भारतीय नवजागरण – सम्पा० डॉ० त्रिभुवन सिंह

(जनवरी–जून 2021 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-E416

पत्रकारिता प्रशिक्षण

पूर्णांक 100 — लिखित परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट 6 — सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम :

इकाई–1 पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार, भारत में पत्रकारिता का आरम्भ, हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास।

इकाई–2 समाचार पत्रकारिता के मूल तत्त्व – समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम, सम्पादन कला के सामान्य सिद्धान्त – शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, आमुख और समाचार पत्र की प्रस्तुति प्रक्रिया।

इकाई–3 समाचार पत्रों के विभिन्न स्तम्भों की योजना, दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता, समाचार के विभिन्न स्रोत, संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्य पद्धति।

पत्रकारिता से सम्बन्धित लेखन – सम्पादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन (फालोअप) आदि की प्रविधि।

इकाई–4 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता – रेडियो, टी०वी, वीडियो, केबल, मल्टीमीडिया और इण्टरनेट की पत्रकारिता।

प्रिंट मीडिया और मुद्रण कला – प्रूफशोधन, ले–आउट तथा पृष्ठ–सज्जा। पत्रकारिता का प्रबन्धन – प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण व्यवस्था।

इकाई–5 भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार, सूचना का अधिकार एवं मानवाधिकार, मुक्त प्रेस की अवधारणा, लोक सम्पर्क तथा विज्ञापन।

प्रसार भारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी, प्रेस सम्बन्धी प्रमुख कानून एवं आचार संहिता, प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. हिन्दी पत्रकारिता – कृष्ण बिहारी मिश्र
2. विकास पत्रकारिता – राधेश्याम शर्मा
3. समाचार पत्र : मुद्रण और साजसज्जा – श्याम सुन्दर शर्मा
4. नई पत्रकारिता और समाचार लेखन – सविता चड्ढा
5. समाचार फीचर – लेखन एवं सम्पादन कला – हरिमोहन
6. हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास और स्वरूप – शिवकुमार दुबे
7. आधुनिक पत्रकारिता – अर्जुन तिवारी
8. सम्पादन के सिद्धान्त – रामचन्द्र तिवारी
9. पत्रकारिता के सिद्धान्त – रमेश चन्द्र त्रिपाठी
10. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता – हरिमोहन
11. सम्पादन कला – सम्पा० के०सी० नारायण
12. सम्पादन कला एवं प्रूफ पठन – हरिमोहन
13. भारतीय प्रसारण माध्यम – डॉ० कृष्ण कुमार रत्तू
14. इलैक्ट्रानिक मीडिया – टी०डी०एस० आलोक
15. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक – हर्षदेव
16. प्रेस कानून और पत्रकारिता – संजीव भानावत
17. समाचार संकलन और लेखन – नन्द किशोर त्रिखा

(जनवरी–जून 2021 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, चतुर्थ सेमेस्टर

MHL-E417

लोक साहित्य

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1 लोक और लोक–वार्ता, लोक–वार्ता और लोक–विज्ञान।
लोक–संस्कृति : अवधारणा, लोक–वार्ता और लोक–संस्कृति, लोक–संस्कृति और साहित्य।
लोक–साहित्य : अवधारणा, संस्कृत वाङ्मय में लोकोन्मुखता।
हिन्दी के आरम्भिक साहित्य में लोकतत्व, वर्तमान अभिजात साहित्य और लोक–साहित्य का अंतःसम्बन्ध। लोक–साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध।

इकाई – 2 भारत में लोक–साहित्य के अध्ययन का इतिहास।
हिन्दी लोक–साहित्य के विशिष्ट अध्येता। लोक–साहित्य की अध्ययन–प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएँ।

इकाई – 3 लोक–साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण–
लोक–गीत, लोक–नाट्य, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–नृत्य–नाट्य, लोक–संगीत।
लोक–गीत : संस्कार–गीत, व्रत–गीत, श्रम–गीत, ऋतु–गीत, जाति–गीत।
लोक–नाट्य : रामलीला, रासलीला, कीर्तनियाँ, स्वांग, यक्षगान, भवाई संपेड़ा, विदेसिया, माच, भाँड़, तमाशा, नौटंकी, जात्र, कथकली।
हिन्दी लोक–नाट्य की परम्परा एवं प्रविधि। हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोक नाट्यों का प्रभाव।
लोक–कथा : व्रत–कथा, परी–कथा, नाग–कथा, बोध–कथा, कथानक–रूढ़ियाँ अथवा अभिप्राय।

इकाई – 4 लोक–गाथा : ढोला–मारू, गोपीचन्द – भरथरी, लोरिकायन, नल–दमयंती, लैला–मंजनूँ, हीर–राँझा, सोहनी–महीवाल, लोरिक–चंदा, बगडावत, आल्हा–हरदौल।
लोक–नृत्य–नाट्य।
लोक–संगीत : लोकवाद्य तथा विशिष्ट लोक धुनें।
लोक–भाषा : लोक सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ।

इकाई – 5 निम्नलिखित जनपदीय भाषाओं के लोक–सहित्य में से किसी एक का अध्ययन– राजस्थानी, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, बुन्देलखण्डी, हरियाणवी, खड़ी बोली, कुमाऊँनी, गढ़वाली, छत्तीसगढ़ी, बघेली, मालवी।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. लोक साहित्य विज्ञान – डॉ० सत्येन्द्र
2. कुमाऊँ का लोक साहित्य – डॉ० कृष्णानन्द जोशी
3. गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन – मोहन लाल बाबुलकर
4. लोक साहित्य की रूपरेखा – सम्पा० डॉ० कृष्ण चन्द्र शर्मा
5. लोक साहित्य : सिद्धान्त और प्रयोग – डॉ० श्रीराम शर्मा
6. लोक साहित्य के प्रतिमान – डॉ० कुंदन लाल उप्रेती
7. कौरवी लोक साहित्य – डॉ० नवीन चन्द्र लोहनी

(जनवरी–जून 2020 से लागू)

(जनवरी–जून 2021 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-E418

अनुवाद विज्ञान

पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1 अनुवाद : परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएँ।
अनुवाद का स्वरूप : अनुवाद कला, विज्ञान अथवा शिल्प।
अनुवाद की इकाई : शब्द, पदबंध, वाक्य, पाठ।
अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि : विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन।

इकाई – 2 अनुवाद – प्रक्रिया के विभिन्न चरण, स्रोतभाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थांतरण की प्रक्रिया। अनूदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ–संप्रेषण की प्रक्रिया। अनुवाद–प्रक्रिया की प्रकृति।
अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त।

इकाई – 3 अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार –
कार्यालयी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक, मानविकी, संचारमाध्यम, विज्ञापन आदि।
अनुवाद की समस्याएँ : सृजनात्मक अथवा साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ, कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, विधि–साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, कोश एवं पारिभाषिक शब्दार्थ के निर्माण की समस्याएँ, मीडिया क्षेत्र के अनुवाद की समस्याएँ, विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएँ।
अनुवाद के उपकरण : कोश, पारिभाषिक शब्दावली, थिसारस, कम्प्यूटर आदि।
अनुवाद : पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन।
मशीनी अनुवाद।

इकाई – 4 अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगिकता एवं व्यावसायिक परिदृश्य।
अनुवादक के गुण।
पाठ की अवधारणा और प्रकृति–
पाठ –शब्द प्रति शब्द
शाब्दिक अनुवाद
भावानुवाद
छायानुवाद
पूर्ण और आंशिक अनुवाद
आशु अनुवाद

इकाई – 5 व्यावहारिक अनुवाद (प्रश्न पत्र में दिए गए अंग्रेजी अवतरण का हिन्दी में अनुवाद तथा हिन्दी अवतरण का अंग्रेजी में अनुवाद)

संदर्भ ग्रन्थ–

1. अनुंवाद विज्ञान की भूमिका – कृष्ण कुमार गोस्वामी
2. अनुवाद : सिद्धान्त और प्रयोग – जी० गोपीनाथन
3. अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
4. अनुवाद : सिद्धान्त और प्रविधि – भोलानाथ तिवारी
5. अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ – भोलानाथ तिवारी